रोमांच का मूल्य
कहानी साकागावेआ की

लेखन: एन डॉनगन जॉनसन

चित्र: पिल्लेजी

भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

रोमांच का मूल्य
कहानी साकागावेआ की

लेखनः एन डॉनगन जॉनसन

चित्रः पिल्लेजी

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

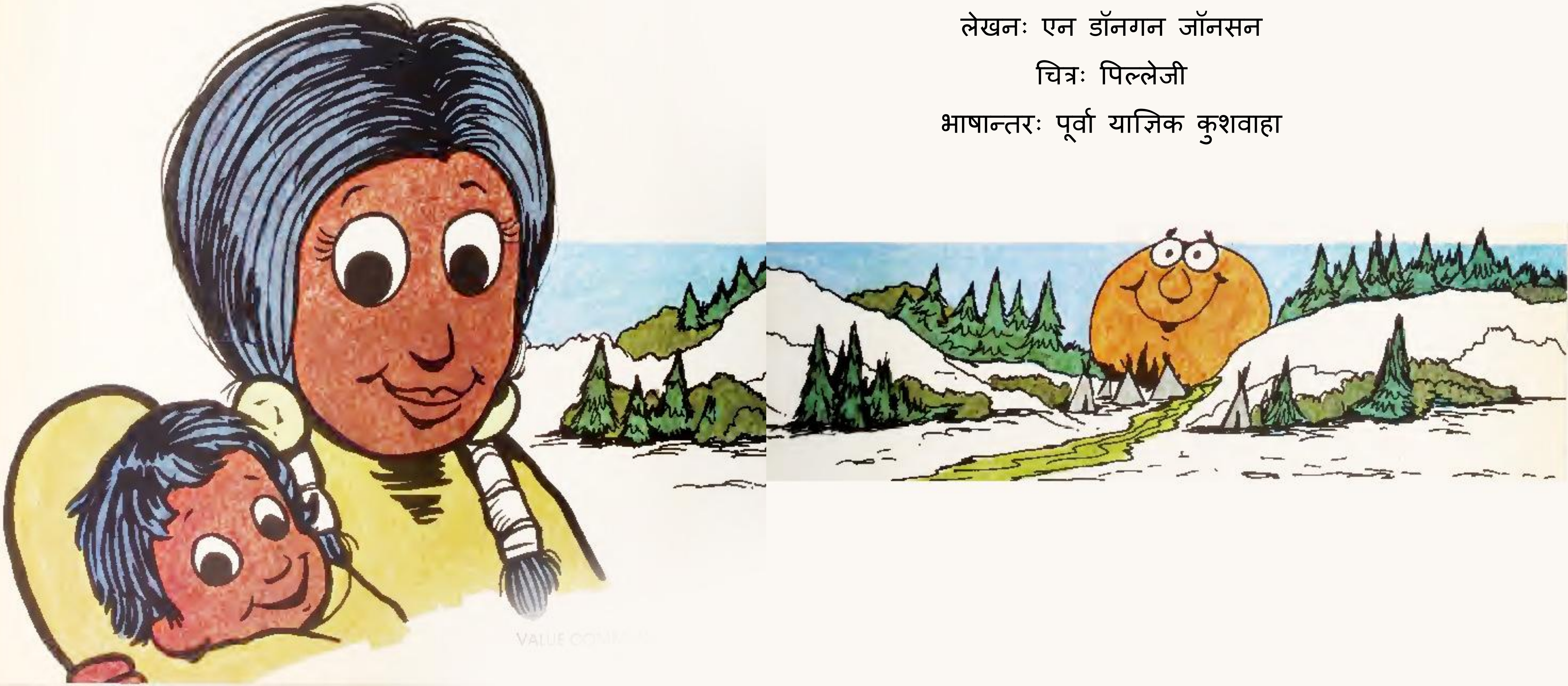

कॉनल, डैसमंड, मार्लेन तथा बिली को समर्पित

यह कहानी साकागावेआ के दिलचस्प तजुर्बों की है। यह उसके जीवन की घटनाओं पर आधारित है। साकागावेआ के जीवन के बारे में ऐतिहासिक तथ्य इस क़िताब के अन्त में शामिल किए गए हैं।

एक समय की बात है . . .

बहुत पहले जब हमारे देश (संयुक्त राज्य अमरीका) का अधिकतर हिस्सा जंगल था, एक छोटी-सी इण्डियन (अमरीका के मूल निवासी) लड़की जिसका नाम ग्रास वुमन था (इण्डियन कबीलों में प्राकृति में पाई जाने वाली वस्तुओं पर नाम रखे जाते थे), उस दुर्गम इलाके में पल-बढ़ रही, जहाँ आज आइडाहो और मॉन्टाना मिलते हैं।

ग्रास वुमन इण्डियनों के शोशोन कबीले से थी। उसके कबीले के लोग शिकारी और घोड़ों के सौदागर थे। गर्मियों में वे ऊँचे पहाड़ों में रहते थे, बेरियाँ और मछली खाते थे। सर्दियों में जब पहाड़ों पर बर्फ़ का कम्बल बिछ जाता, वे नीचे की गर्म वादियों पर उतर आते और वहाँ जंगली पशुओं का शिकार करते थे।

वे अक्सर अपने डेरे / शिविर की जगह बदलते रहते थे ताकि उनके रेवड़ को हमेशा ताज़ी घास मिल सके।

शोशोन खेतीबारी नहीं करते थे। वे स्थाई घर नहीं बनाते थे। ज़िन्दगी जीने का यह घुमन्तू और अनिश्चित तरीका था। पर ग्रास वुमन को वह रास आता था।

"दिन की शुरुआत में मुझे कभी पता नहीं होता कि वह ख़त्म कैसे होगा," ग्रास वुमन ने माँ से कहा। "शायद यही बात ज़िन्दगी को इतना दिलचस्प और रोमांचक बनाती है।"

"शायद यह ज़्यादा आरामदायक हो कि हमें पता हो कि दिन ख़त्म कैसे होगा," उसकी माँ ने जवाब में कहा। "फिलहाल मुझे यह पक्का पता है कि रात के खाने में हमारे पास बेरियाँ होंगीं।"

"बेरियाँ तो होंगी," ग्रास वुमन ने ऐलान किया। "मतलब तब, जब मैं उन्हें खोज पाऊँ।" और वह नदी के पास की झाड़ियों में बेरियाँ खोजने दौड़ी।

क्या उसे बेरियाँ मिलीं? नहीं। पर उससे भी बेहतर कुछ ज़रूर मिला। उसे साल्मन मछली मिली। ये गदराई मछलियाँ नदी की धारा की उल्टी दिशा में बढ़ने को जूझ रही थीं। वे साफ़ पानी के ऊपर कूदतीं और छपाक से नदी में वापस गिर रही थीं!

"अरे वाह!" ग्रास वुमन बोली। "साल्मन माछ तो बेरियों से कहीं बेहतर है! कम से कम आज सबको भरपेट खाने को मिलेगा!"

यह सोच वह मछली पकड़ने नदी में उतरी।

उसने एक मोटी-ताज़ी साल्मन पकड़ तट पर फेंकी और खुशी से हंसी। "यह दिन जो शक्ल ले रहा है, मुझे पसन्द आ रहा है," उसने खुश हो कहा।

"कितना अच्छा होता अगर सभी रोमांच इतनी अच्छी तरह ख़त्म होते," एक हल्की-सी आवाज़ ने कहा।

ग्रास वुमन ने पलकें झपकाईं। पहले तो उसे कुछ भी नज़र नहीं आया, सिवा नदी किनारे पड़े एक गोल पत्थर के। तब वह पत्थर हिला और ग्रास वुमन ने ग़ौर किया कि वह पत्थर नहीं बल्की एक छोटा-सा हरा कछुआ था, जो अपनी चमकदार पीली आँखों से उसे घूर रहा था।

"बेशक सभी दिलचस्प तजुर्बों के नतीजे अच्छे नहीं होते। क्योंकि उनमें जोखिम होता है," कछुए ने कहा। "यही तो रोमांच होता है - आप जो करते हो उसका अंजाम आपको पता नहीं होता, है ना? मुझे भी रोमांच पसन्द हैं। अगर मैं हमेशा अपनी खोल में महफ़ूज़ दुबका रहूँ तो मैं कहीं जा ही नहीं सकता। मुझे हिलना-डुलना पड़ता है, अपनी गर्दन खोल से बाहर निकालनी पड़ती है, जोख़िम उठाने पड़ते हैं।"

"अरे मुझे भरोसा ही नहीं हो रहा," ग्रास वुमन चीखी। "कछुए तो बोलते नही!"

"क्या तुम्हें पक्का पता है?" कछुए ने हंस कर पूछा।

"मुझे पूरा भरोसा है," ग्रास वुमन ने कहा। "मुझे लगता है कि तुम एक ख़याली जीव हो। लगता है कि मैं तुम्हारी कल्पना कर रही हूँ। पर तुम असली न भी होओ तो भी अजीब कछुए हो, और शायद चतुर भी। मैं तुम्हें अपने साथ घर ले जाती हूँ, आगे जो होता है हम देखेंगे।"

ग्रास वुमन कछुए को घर ले गई। उसने अपने ख़याली कछुए को 'चलते पत्थर' का नाम दिया, जो किसी कछुए के लिए एक बढ़िया नाम था।

उस दिन से कछुआ हरेक पल ग्रास वुमन के साथ होता। जब वह खाए जा सकने वाले कन्द तलाशने जाती, वह साथ जाता। वह उसे बेरियाँ इकट्ठा करने या मछली पकड़ने जाते वक़्त साथ ले जाती। जब भी उसका कबीला नए चरागाह की तलाश में शिविर समेटता कछुआ साथ चलता। तब वह ग्रास वुमन के लिपटे बिछौने के ऊपर सवारी करता।

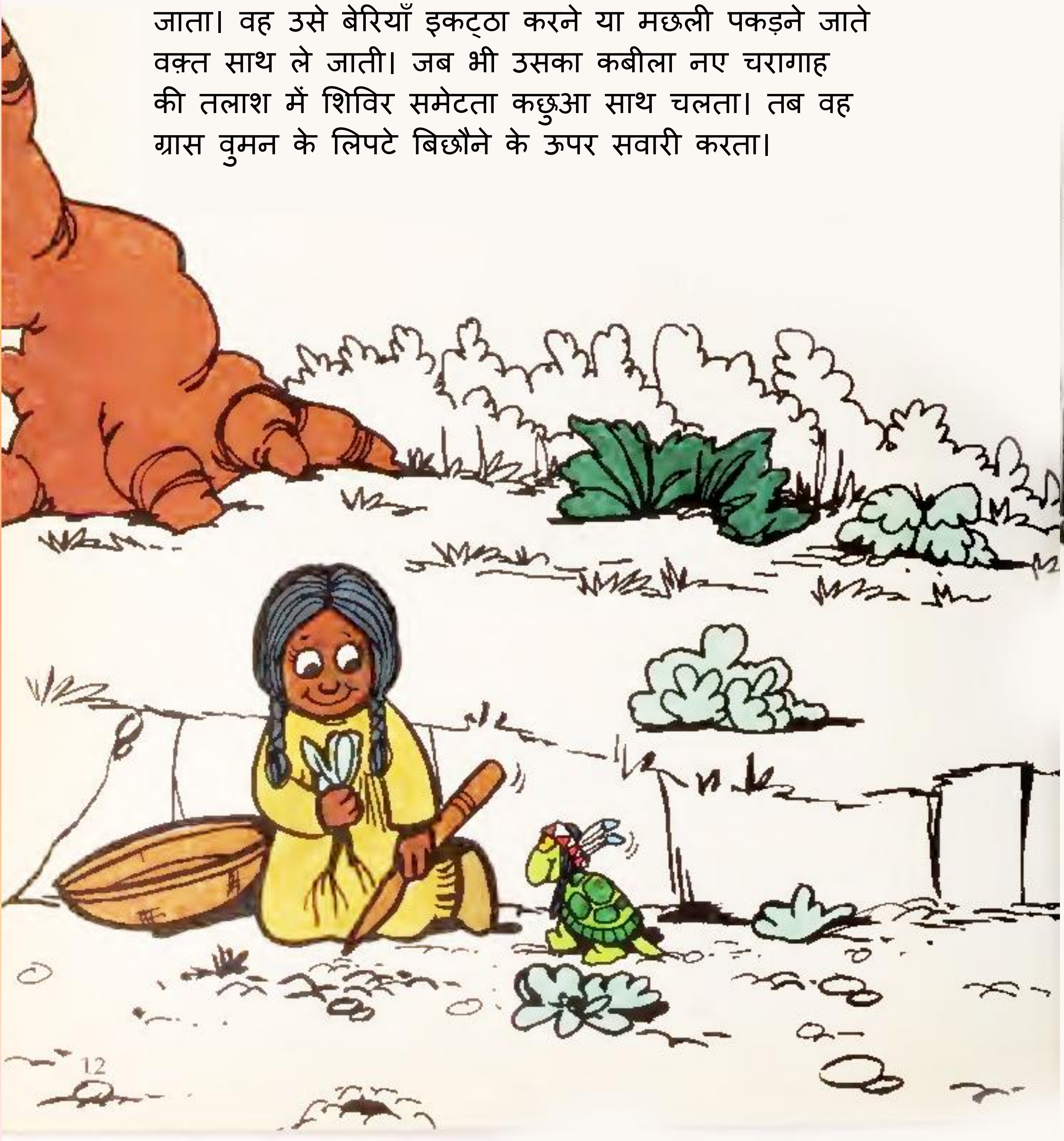

गर्मियाँ ख़त्म होने को थीं जब शोशोन पूर्व दिशा में लम्बे पैदल सफ़र पर निकल पड़े। वे उस जगह जा रहे थे जिसे आज मिसूरी नदी की त्रिशाखा कहते हैं।

"जब हम नदी तक पहुँच जाएंगे," ग्रास वुमन ने कहा। "पुरुष मैदानी इलाके में भैंसे का शिकार करने दौड़ेंगे।

"ओह! यह तो सचमें एक दिलचस्प तजुर्बा होगा," कछुए ने उत्साह से कहा। "मैं बेसब्री से इसका इन्तज़ार करूंगा।"

जब शोशोन कबीले ने नदी के पास पहुँच अपने तम्बू गाड़े और शिविर बना लिया, ग्रास वुमन और चलते पत्थर ने पुरुषों को शिकार की तैयारी करते देखा।

''कितना दिलचस्प है यह,'' चलते पत्थर ने कहा। ''क्या तुम्हें लगता है कि उनमें से कोई जाँबाज़ एक कछुए को अपने साथ ले जाना चाहेगा?''

ग्रास वुमन कहने जा रही थी कि उसे ऐसा नहीं लगता। पर वह कुछ कह पाती उसके पहले उसने घोड़ों की टापें सुनीं। तब बन्दूकों की गर्जना के साथ कई शोशोन जाँबाज़ धरती पर जा गिरे।

''दौड़ो, ग्रास वुमन!'' उसके पिता चीखे। ''भागो और छिप जाओ! ये हमारे दुश्मन हैं, मिनातारी कबीले के लोग। भागो, जान बचाने के लिए भागो!''

ग्रास वुमन दौड़ी। उसने फिर से बन्दूकों की आवाज़ सुनी, पर पलट कर नहीं देखा। वह नदी में उतरी और लम्बे सरकंडों के पास पहुँचने की कोशिश करने लगी। ''मैं वहाँ छिप सकती हूँ,'' उसने खुद से कहा। ''हो सकता है कोई मुझे ढूंढ ही न पाए।''

पर तब उसने अपने पीछे टापें सुनीं, और नदी में उतर दौड़ते घोड़ों की छपछपाहट।

''अरे नहीं!'' वह चीखी। ''मदद करो! कोई मदद तो करो!''

पर कोई मदद नहीं मिली।

एक मिनातारी योद्धा अपने घोड़े से नीचे झुका और उसने ग्रास वुमन को लपक कर घोड़े पर अपने सामने बैठा लिया।

"मुझे छोड़ो, जाने दो!" उसने चीख कर कहा।

मिनातारी योद्धा हंसा। उसने अपने घोड़े को मोड़ा और ग्रास वुमन के साथ शोशोन शिविर से उल्टी दिशा में दौड़ पड़ा।

जब तक ग्रास वुमन उसे अगुआ करने वाले के साथ मिनातारी शिविर पहुँची वह झटके खा चुकी थी, उसे चोटें लगी थीं, और साँसें उखड़ रही थीं। वह इस कदर सहमी हुई थी कि उसके आँसू थम ही नहीं रहे थे। पर जब उसने देखा कि उसके कुछ दोस्तों को भी धर-पकड़ कर ले आया गया है, उसका अकेलापन का अहसास कुछ कम हुआ। इन दोस्तों में लीपिंग-फिश वुमन (उछलती-मछली कुमारी) और ऑटर वुमन (ऊदबिलाव कुमारी) भी थीं। कुछ शोशोन लड़कों को भी बन्दी बनाया गया था जिनमें लम्बा-तगड़ा एल्क हॉर्न (हिरण सींग) भी था।

उस रात जब मिनातारी लोग जीत का जश्न मना रहे थे, सभी शोशोन बच्चे, सहमे से, एक-दूसरे से चिपके बैठे थे।

"मुझे डर है कि शायद मेरे पिता को मार डाला गया है," ग्रास वुमन ने दुख से भर कहा।

"मुझे भी अपने परिवार के बारे में पता नहीं है," लीपिंग-फिश वुमन ने जोड़ा।

बेचारी छोटी-सी ऑटर वुमन कुछ न बोली, पर उसकी आँखें डबडबा आईं और वह रोने लगी।

"रोओ मत," एल्क हॉर्न बोला। वह ऑटर वुमन की ओर झुका, "सब कुछ नाउम्मीद नहीं है," वह फुसफुसाया। "हम यहाँ से निकल भागने का मौका तलाशेंगे और तब अपने कबीले के पास निकल भागेंगे।"

ऑटर वुमन ने यह सुन अपने आँसू पोंछे। ग्रास वुमन को भी कुछ तसल्ली हुई। पर वह यह भी जानती थी कि भाग पाना आसान नहीं होगा।

"मिनातारी हम पर रात-दिन नज़र रखेंगे," ग्रास वुमन ने खुद से कहा। "अगर हम भागे और पकड़े गए तो भला क्या होगा?"

"यह भी तो एक रोमांच ही होगा," ग्रास वुमन के पैरों के पास से एक जानी-पहचानी आवाज़ ने कहा। "यह भरोसा तो नहीं है कि कामयाबी मिल ही जाएगी, पर आज़ादी पाने के लिए कुछ जोखिम उठाना बेमानी नहीं होगा।"

"चलते पत्थर!" ग्रास वुमन चीखी। "तुम्हें देख मैं बेहद खुश हूँ।"

"तुम तक पहुँचने में मुझे वक़्त लगा," कछुए ने जवाब दिया। "मेरी कई ख़ासियतें हैं, पर तेज़ चाल उनमें शामिल नहीं।"

"कछुओं के हिसाब से तुम तेज़ ही कहलाओगे," ग्रास वुमन ने कहा। यह कहते हुए उसकी आवाज़ में खुशी का पुट था।

उस रात बच भागने का कोई मौका नहीं मिला। अगले दिन मिनातारी लोगों ने अपना शिविर समेटा और पूरब की दिशा की ओर सफ़र करना शुरू कर दिया। शोशोन बच्चों के पास उनके साथ चलने के अलाचा कोई चारा न था, सो वे भी पीछे-पीछे चले। उस पूरे दिन, तब अगले और उसके भी अगले दिन तक वे जहाँ से उन्हें अगुआ किया गया था, उससे मीलों दूर आ चुके थे। ग्रास वुमन को लगा कि वह शायद अपने कबीले के लोगों को फिर कभी नहीं देख सकेगी।

समय गुज़रने के साथ अगुआ किए गए बच्चों पर मिनातारी लोगों की पहरेदारी ढीली हो चली। आख़िरकार एक दिन एल्क हॉर्न, ग्रास वुमन के पास आया।

''हमें आज रात निकल भागने की कोशिश करनी चाहिए,'' एल्क हॉर्न ने कहा। ''हम उन लट्ठों को पानी में फेंक उनके सहारे नदी की उतार की ओर बह निकलेगे। अंधेरे में मिनातारी लोगों को हमारे ग़ायब होने का पता नहीं चलेगा। जब तक पता चलेगा हम दूर पहुँच चुके होंगे।''

''इसमें जोखिम तो होगा,'' ग्रास वुमन ने कहा, ''पर हमें कोशिश तो करनी ही चाहिए।''

''उस रात शोशोन बच्चे पेड़ों की छायाओं के नीचे लेटे और आँखें बन्द कर लीं। जब तक सारे मिनातारी सोए काफ़ी रात गुज़र चुकी थी। शिविर में शान्ति पसरने तक चाँद आसमान में ऊँचा चढ़ चुका था, पर रात अंधेरी थी।

''कुछ परेशानियाँ हो सकती हैं,'' चलते पत्थर ने ग्रास वुमन से कहा। ''यह सच है कि तुम्हें अगुआ करने वाले सो चुके हैं। पर तुम्हारे ज़्यादातर दोस्त भी नींद में डूबे हैं।''

''कोई बात नहीं मैं उन्हें जगा दूंगी।''

और ग्रास वुमन ने उन्हें जगाया भी, बिलकुल गुपचुप। ''कोई आवाज़ न करे उसने शोशोन बच्चों को चेताया। वे आहिस्ता से एक के बाद एक, नदी की सुरक्षा में उतरे।

अन्त में ऑटर वुमन और लीपिंग-फिश वुमन ही सोती बची रही थीं।

"सावधानी से," चलते पत्थर ने ग्रास वुमन से कहा, जो ऑटर वुमन को जगाने जा रही थी। "अगर वह चौंकी तो चीख पड़ेगी।"

"ऑटर वुमन जागो!" ग्रास वुमन फुसफुसाई। "चलने का समय हो चुका है।"

ऑटर वुमन ने चौंक कर आँखें खोलीं। "क्या?" वह चीखी, "कौन है? क्या हुआ?"

मिनातारी लोगों ने भी उसकी चीखें सुनीं। पल भर में शिविर में हो-हल्ला मच गया। मिनातारी जाँबाज़ शोशोन बच्चों को तलाशने दौड़े। उनकी स्त्रियों ने ग्रास वुमन और उसकी दोनों सहेलियों को घेर लिया।

"लो, बच निकलने की योजना तो चौपट हो गई," चलते पत्थर ने कहा। यह रोमांच तो बर्बाद हो गया।"

"हो सकता है हम बाद में फिर से कोशिश कर सकें," ग्रास वुमन ने हिम्मत से कहा।

ग्रास वुमन और उसकी सखियाँ मिनातारी गाँव में रहते रहे। उस दौरान उनके सामने बच भागने का एक और मौका आया।

"चलो अब भाग जाते हैं," लीपिंग-फिश वुमन ने एक दिन कहा। "अब मिनातारी हम पर उतनी सख़्त नज़र नहीं रखते। जब तक हम गाँव से बहुत दूर नहीं पहुँच जाते उन्हें हमारी नामौजूदगी का पता ही नहीं चलेगा।"

ग्रास वुमन को पता था कि बात सच है। पर उसने मना करते हुए अपना सिर हिलाया। "तुम तेज़ और फुर्तीली हो, तुम्हारे पैर मज़बूत हैं। तुम दौड़ सकती हो। मिनातारी तुम्हें पकड़ नहीं पाएंगे। पर ऑटर वुमन के पैर मुड़े हुए हैं, वह दौड़ ही नहीं सकती। अगर हम दोनों उसे छोड़ जाएंगे, वह निपट अकेली हो जाएगी। तुम जाओ, मैं उसके साथ रह जाती हूँ।"

लीपिंग-फिश वुमन ने ग्रास वुमन को गले लगाया। विदा लेते वक़्त वह रोई भी, पर चली गई। ग्रास वुमन ऑटर वुमन के पास उसका हाथ थामे बैठी।

"तुम बहादुर लड़की हो," चलते पत्थर ने कहा। "चाहती तो तुम भी लीपिंग-फिश वुमन के साथ बच निकल सकती थीं।"

"मिनातारी लोगों के साथ रहना भी एक फर्क किस्म का दिलचस्प रोमांच होगा, है ना?" ग्रास वुमन ने कहा। "हमें पता नहीं कि यह तजुर्बा कैसा रहेगा। ख़ैर जो भी होगा सो देखा जाएगा।"

मिनातारी कबीले के लोग किसान होने के साथ शिकारी थे और जानवरों को जाल में फंसाया भी करते थे। उन्होंने धीरे-धीरे ग्रास वुमन और ऑटर वुमन को मक्की बोना, फसल की देखभाल करना, फसल काटना, और मक्की की रोटी बनाना सिखाया।

''तुम कड़ी मेहनत करती हो, ग्रास वुमन,'' चलते पत्थर ने एक दिन कहा। ''जब तुम मक्के की देखभाल नहीं करती, तुम हिरन की खाल के जूते बनाती हो या भैंसे की खालों को खुरच कर साफ़ करती हो। तो बताओ अब तुम मिनातारी लोगों के साथ अपने तजुर्बे के बारे में क्या सोचती हो?''

''आज़ाद घूमने में ज़्यादा मज़ा था, जैसे मैं शोशोन लोगों के बीच घूमा करती थी,'' ग्रास वुमन ने कहा। ''पर मुझे कड़ी मेहनत करने की आदत है। और फिर मुझे अगुआ करने वाला मिनातारी रहमदिल है। देखते हैं, हो सकता है आगे चल कर यहाँ कुछ उत्तेजक भी घटे।''

ग्रास वुमन ने यह कहा ही था कि मिनातारी लोगों में खलबली मच गई।

''गोरे आए हैं,'' एक मिनातारी स्त्री ने कहा। ''ये गोरे हमारी खालें ख़रीदेंगे। चलो तुम भी देखो ग्रास वुमन। पता है वे खालों के बदले बन्दूकें, मनके और कम्बल देते हैं।''

ग्रास वुमन ने पहले कभी किसी गोरे इन्सान को देखा ही नहीं था। सो वह व्यापारी को देखने भागी। वह गोरा तुसां शाबोनो नाम का एक फ्रांसीसी व्यापारी था। वह मिनातारी लोगों से बात करने के लिए इशारों की भाषा का इस्तेमाल कर रहा था।

''यह गोरा पहले भी यहाँ आ चुका है,'' एक मिनातारी ने कहा। ''उसे जुआ खेलना बहुत पसन्द है। उसे देखते जाओ।''

ग्रास वुमन और ऑटर वुमन ने उसे देखा। उन्होंने उसे मिनातारी लोगों का एक खेल खेलते देखा। वह उस मिनातारी के साथ खेल रहा था जो उस खेल में माहिर था और ग्रास वुमन का मालिक भी। खेलते-खेलते शाबोनो आँखें उठा शोशोन लड़कियों को देखता और मुस्कुराता।

''कुछ ऐसा हो रहा है, जो मुझे कतई पसन्द नहीं आ रहा,'' चलते पत्थर ने कहा, और वह एक खोखले लट्ठ के नीचे जा छिपा।

उसी समय ग्रास वुमन के मालिक ने एक ज़ोरदार आवाज़ निकाली जो निराशा ओर दुख से भरी थी। वह उठा और ग्रास वुमन और ऑटर वुमन के पास आया।

''मैंने भारी बेवकूफ़ी की,'' उसने कहा। ''मैंने इस फ्रांसीसी गोरे के साथ जुआ खेला और हार गया - अब मैं तुम दोनों का मालिक नहीं। उसने तुम दोनों को जीत लिया है।''

''हमारे साथ अब क्या होगा?'' ऑटर वुमन घबरा कर फुसफुसाई।

''कौन जानता है?'' ग्रास वुमन ने कहा। ''हिम्मत रखो ऑटर वुमन। हो सकता है कुछ बुरा हो ही नहीं। और शायद जो हो वह उत्तेजक हो - एक दिलचस्प तजुर्बा, एक नया रोमांच!''

अगले दिन ग्रास वुमन और ऑटर वुमन शाबोनो के साथ मिनातारी गाँव से निकले। कई दिनों तक वे पूरब दिशा में बढ़ते रहे, जब तक वे उस गाँव न पहुँच गए जहाँ मानदन कबीले के इण्डियन रहते थे। जब शाबोनो व्यापार के लिए पश्चिम में बसे कबीलों के पास सफ़र नहीं करता था वह यहीं रहा करता था।

''मुझे डर लग रहा है,'' ऑटर वुमन ने ग्रास वुमन से कहा। ''ये अजनबी हमारे साथ न जाने क्या करें?''

''वे कुछ बुरा करें ऐसा लगता तो नहीं,'' ग्रास वुमन ने दिलासा देते कहा। ''बुरा क्यों करेंगे? और फिर हमारा नया मालिक हमारी हिफाज़त भी तो करेगा। आख़िर वह यह तो चाहता ही है कि हम उसके लिए काम करें।''

ग्रास वुमन सही थी। जल्द ही दोनों लड़कियाँ शाबोनो के लिए भैंसों की खालों को सुधारने में व्यस्त हो गईं। वे उसके लिए कपड़े सीतीं और हिरन की खाल के जूते गांठतीं। वे उसके लिए खाना पकातीं, मक्का बोतीं, और वे कन्द खोदतीं, जिनका इस्तेमाल वह फ्रांसीसी दवाएं बनाने में करता था।

''मुझे यहाँ अच्छा लग रहा है,'' एक दिन ऑटर वुमन ने कहा। ''हालांकि हमें खूब मेहनत करनी पड़ती है, पर खाने के लिए हमेशा काफ़ी होता है।''

''यहाँ मैदानी इलाके में खाने को बेशक होगा,'' ग्रास वुमन ने जवाब दिया। ''पर इन मानदानों की ज़िन्दगी तो मिनातारियों से भी ज़्यादा उबाऊ है। ये लोग तो कभी कहीं जाते ही नहीं। हमेशा एक ही जगह बने रहते हैं।''

ग्रास वुमन कोशिश करती कि वह निराश न हो। वह चतुर और कुशाग्र थी और खुद को खुश रखने की कोशिश करती थी। मानदान लोगों ने जल्द ही यह तय किया कि ग्रास वुमन उसके लिए सही नाम नहीं है।

"उसे एक नया नाम देना होगा," उन्होंने कहा। "हम उसे साकागावेआ कहा करेंगे, जिसका मतलब पाखी स्त्री होता है। यह उसके लिए एक बेहतर नाम होगा क्योंकि वह किसी गौरैया की तरह इधर-उधर फुदकती, आती-जाती रहती है। कभी एक ठौर स्थिर नहीं बैठती।"

"नाम तो अच्छा है," ग्रास वुमन ने कहा। "पर मुझे वे किस नाम से पुकारते हैं, उससे क्या फ़र्क पड़ता है? इस गाँव में सभी दिन एक से होते हैं। कुछ भी दिलचस्प नहीं घटता। नाम बदलने से मुझे क्या मदद मिलेगी।"

"धीरज धरो," चलते पत्थर ने जवाब दिया। "मुझे तो लग रहा है कि तुम्हें ज़िन्दगी में कई दिलचस्प तजुर्बे होंगे - अद्‌भुत और रोमांच से भरे।"

सकागावेआ उस वक़्त तकरीबन सोलह बरस की थी। वह मानदानों के साथ पिछले पाँच वर्षों से रह रही थी। यह समय इतना लम्बा था कि उसे बचपन के शोशोन शिविर की यादें अब किसी दूर के सपने जैसी लगने लगी थीं। ये सपने तब और भी दूर के लगने लगे जब शाबोनो ने तय किया कि वह साकागावेआ और ऑटर वुमन को अपनी बीवियाँ बनाएगा।

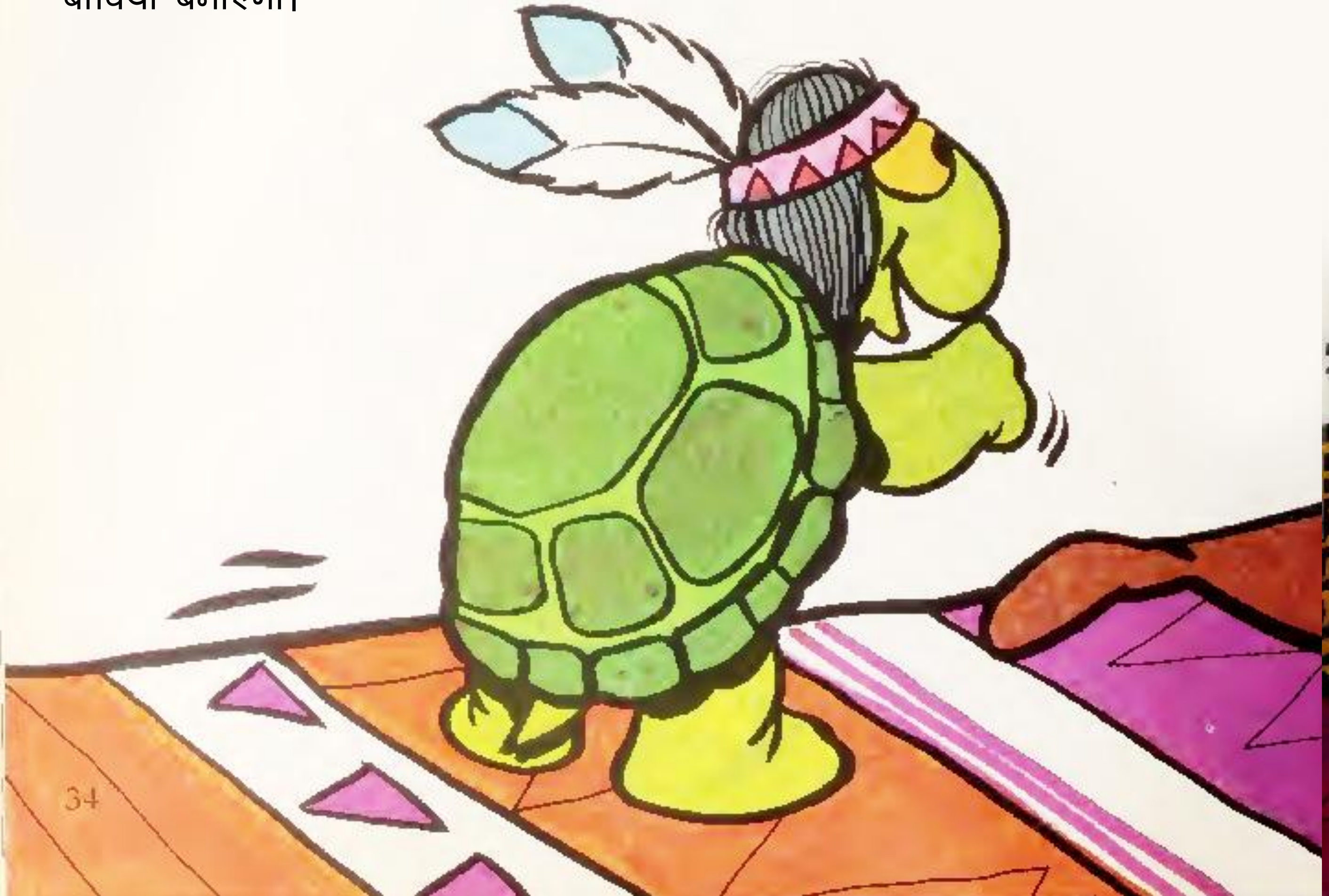

"क्या यह वह रोमांचक तजुर्बा है जिसकी बात तुम कर रहे थे?" साकागावेआ ने चलते पत्थर से पूछा। "अगर है, तो मुझे कतई पसन्द नहीं। शाबोनो मेरा पति होने के लिए बहुत ही बड़ा है।"

"मैं इस तरह के रोमांचक तजुर्बे की बात नहीं सोच रहा था।"

जब सोकागावेआ और चलता पत्थर इस इन्तज़ार में थे कि कुछ उत्तेजक घटे, दूर के एक शहर वॉशिंगटन से एक बड़ी ख़बर आई।

साल था 1803 का। फ्रांस के बादशाह नेपोलियन बोनापार्ट ने लूइसियाना का इलाका संयुक्त राज्य अमरीका को बेचा ही था। यह नया इलाका मिसिसिपी नदी से रॉकीस् तक और मैक्सिको की खाड़ी से लेकर कनाडा के उत्तरी भाग तक पसरा था।

''अब हमारे पास हज़ारों वर्ग मीलों तक का जंगल है,'' राष्ट्रपति जैकसन ने कहा। ''हमें इस इलाके की खोजबीन करना चाहिए और प्रशांत महासागर तक पहुँचने का ज़मीनी रास्ता तलाशना चाहिए।''

राष्ट्रपति ने दो साहसी सैनिकों - कप्तान मैरीवैदर लूइस और कप्तान विलियम क्लार्क को महाद्वीप के पश्चिमी छोर तक की खोजबीन के इस अभियान का नेतृत्व करने के वास्ते चुना।

''आप देश की सेवा तो करोगे ही,'' राष्ट्रपति ने कहा, ''पर इसमें भी शक नहीं कि यह रोमांचक तजुर्बा ऐसा होगा जिसे कभी भुलाया न जा सकेगा।''

''हम सावधानी बरतेंगे ताकि अभियान कामयाब हो,'' दोनों नेताओं ने कहा। और उन्होंने ऐसे लोगों को अभियान से जोड़ना शुरु किया जो बहादुर व कुशल हों और जिनकी रुचि अमरीकी महाद्वीप को एक से दूसरे छोर तक पार करने वाले पहले लोग बनने में हो।

1804 के बसन्त में लूइस और क्लार्क अपने खोजी दल के साथ सेंट लूईस से निकले। उस समय कई लोग मानते थे कि अमरीका की नदियों के रास्ते प्रशान्त महासागर तक पहुँचा जा सकता है। सो खोजी दल मिसूरी नदी के रास्ते उत्तर की ओर बढ़ा।

दल में बत्तीस सैनिक और दस नागरिक थे। लुइस और कलार्क के पास रसद का पहाड़ और मंहगे उपकरण थे। उनके पास एक पचपन फुट लम्बी नाव थी और दो छोटी डोंगियाँ। इन्हें पालों और चप्पुओं, दोनों ही से चलाया जा सकता था।

"दल का हर व्यक्ति जो लिख सकता है, वह एक डायरी रखेगा," कप्तान लूइस ने हुक्म दिया। "अगर हम प्रशान्त महासागर तक पहुँच सके तो हमारा यह सफ़र इतिहास रचेगा। इसलिए यह ज़रूरी है कि सफ़र के दौरान जो कुछ घटे उसे हम दर्ज करते चलें।"

दल 1600 मील तक जंगलों के बीच से गुज़रा। जब मैदानी इलाके में सर्दियाँ आईं वे उस जगह पहुँच चुके थे जिसे आज फोर्ट मानदान कहते हैं। यह जगह आज के उत्तरी डकोटा के बिस्मार्क शहर के पास थी।

"हम अगले बसन्त तक आगे बढ़ नहीं सकते," लूइस ने कहा। "हवाएं तेज़ होती जाएंगी और नदी भी जल्द ही जम जाएगी।"

सो खोजियों ने अपनी नाव और डोंगियाँ पानी से खींच तट पर निकालीं और मानदानों के गाँव, जहाँ साकागावेआ रहती थी, के पास ही अपने आसरे बनाए। उन्होंने अपनी झोंपड़ियों के गिर्द बाड़ा बनाया और बसन्त के आने का इन्तज़ार करने लगे।

जब खोजी दल आसरों की सुरक्षा में इन्तज़ार कर रहा था, उन्होंने आगे के सफ़र की कठिनाइयों और उनका सामना करने की तैयारी के लिए क्या करना चाहिए के मुद्दों पर भी चर्चा की।

"आपको एक दुभाषिए की दरकार होगी," फ्रांसीसी तुसों शाबोनो ने उनसे कहा। शाबोनो यह टोह लेने आया था कि ये गोरे आख़िर यहाँ क्या कर रहे हैं। "यहाँ से प्रशान्त सागर तक के इलाके में कई इण्डियन कबीले बसते हैं। मैं आपकी ओर से मिनातारी लोगों से बात कर सकता हूँ। और मेरी पत्नि साकागावेआ, शोशोन कबील की है। शोशोन कबीले के लोग पहाड़ों क पीछे रहते हैं। उनके पास घोड़े हैं। आप लोगों को घोड़ों की ज़रूरत पड़ेगी।"

लूइस और क्लार्क को जल्द ही यह अहसास हो गया कि शाबोनो शेखीबाज़ है और मिनातारी भाषा भी अच्छे से जानता नहीं है। उन्होंने ग़ौर कर लिया कि उस फ्रांसीसी को उनके लिए तर्जुमा करते समय साकागावेआ की मदद चाहिए होती है।

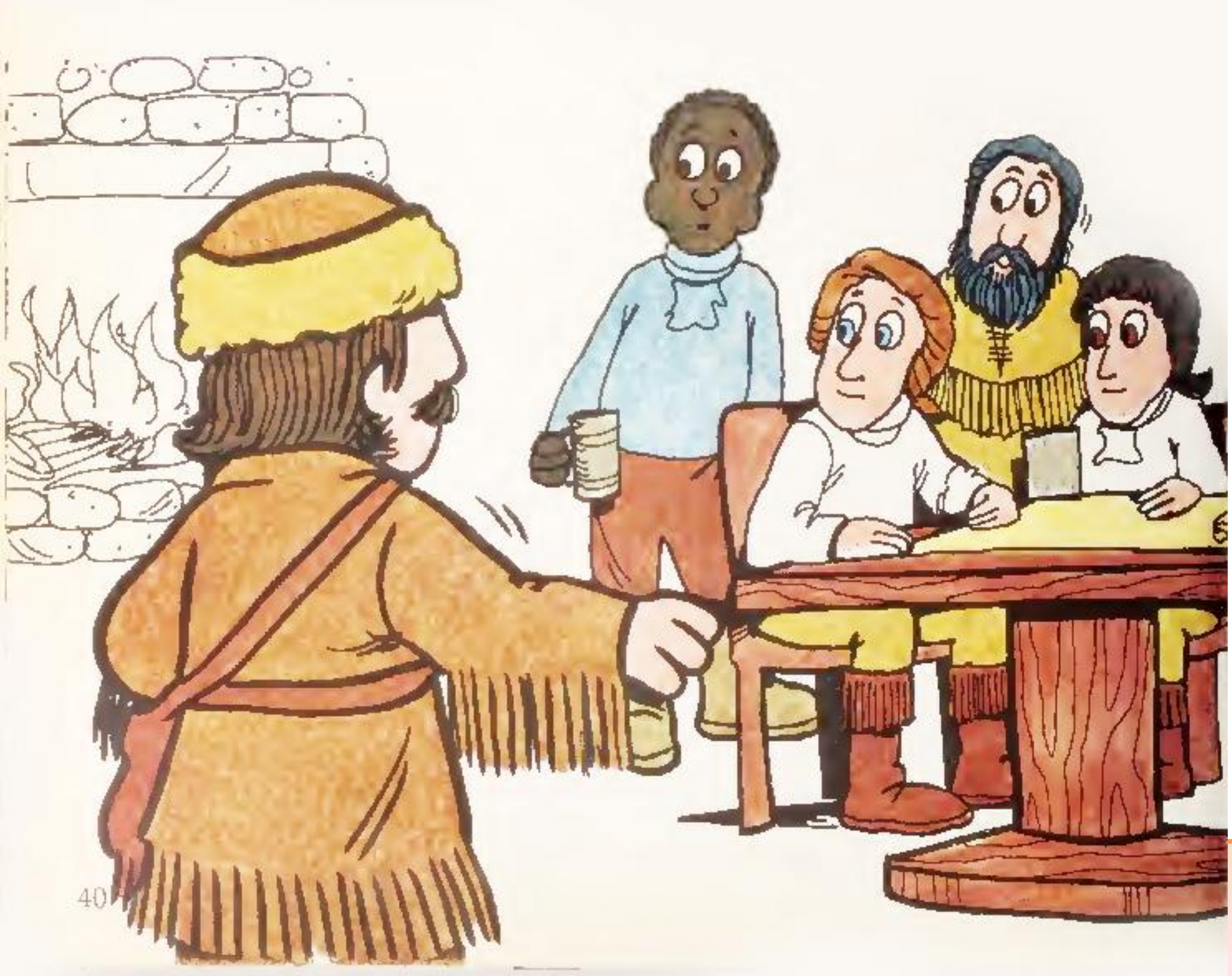

"पर क्या हम इस इण्डियन स्त्री को अपने साथ ले जा सकते हैं?" लूइस ने चिन्ता जताई। "इसका तो बच्चा होने वाला है। क्या हम अभियान में एक बच्चा साथ ले जाना चाहते हैं?"

"हमारे पास चारा ही क्या है?" क्लार्क ने कहा। अगर हमें पश्चिम के कबीलों से बातचीत करनी है तो हमें उसकी मदद की ज़रूरत होगी। और अगर हम उसे साथ ले जाना चाहें तो उसका निकम्मा पति भी साथ चलेगा।"

यों शाबोनो को दुभाषिया चुना गया। उसे साकागावेआ को सफ़र में साथ लाना था।

सकागावेआ सफ़र में जाने की तैयारी में जुटी। उसने सबके लिए हिरण की खाल से बने जूते बनाए। चमड़े से बनी कमीज़ों की मरम्मत की। मक्की और सेम के दानों की ढेरियाँ तैयार कीं। हिरन और भैंसे के माँस को धुँआ दिया। जब धरती सर्दियों की गिरफ्त में थी साकागावेआ के बच्चे ने जन्म लिया।

"मेरे लिए एक बेटा!" शाबोनो को अपने नन्हे पर फ़क्र था। "मैं इसका नाम ज्याँ बातिस्ते रखूंगा। एक फ्रांसीसी बच्चे के लिए यह एकदम सही नाम है।"

"और मैं इसे पॉम्प बुलाऊंगी," साकागावेआ ने चलते पत्थर को फुसफुसा कर बताया। "शोशोन में इसका मतलब होता है नेता, और मुझे पता है कि वह नेता बनेगा। नेता के सिवा वह कुछ हो भी कैसे सकता है? वह कप्तान लूइस और कप्तान क्लार्क के इस अद्भुत अभियान का हिस्सा भी तो होगा।"

"यह सनसनीखेज़ तजुर्बा होगा," कछुए ने कहा। "मुझे तो कबसे पता था कि तुम्हारे साथ कुछ अद्भुत होगा। तुम इस सफ़र में मुझे अपने साथ ले जाओगी या मुझे यहाँ अकेले रहना पड़ेगा?"

"तुम जानते ही हो कि मैं तुम्हें साथ ले जाऊंगी," साकागावेआ बोली। "मैं तुम से ही बतियाती हूँ, क्योंकि तुम समझते हो। आख़िर तुम मेरे ही ख़यालों की उपज हो। तुम्हारे बिना मैं कहीं भी नहीं जा सकती।"

अंत-तंत धरती पर बसन्त लौटा। नदियों में जमी बर्फ टूटी, गर्म हवाओं ने उसे पिघलाया। अभियान के पश्चिम की ओर बढ़ने का समय आ चुका था।

साकागावोआ को बिदा करने ऑटर वुमन नदी तट तक आई। जब साकागाओवा ने नन्हे पॉम्प को अपनी पीठ पर बाँधा उसने गहरी उसाँस ली। नन्हा अपनी माँ की पीठ पर गर्म और महफ़ूज़ था।

"काश मेरे पाँव सीधे और मज़बूत होते, तब मैं भी साथ चल पाती," ऑटर वुमन ने कहा।

"मुझे भी तुम्हारी कमी खलेगी ऑटर वुमन," साकागावेआ ने कहा। उसने अपनी सहेली को गले से लगाया और सफेद डोंगी में अपनी जगह जा बैठी। "मेरी गैर-मौजूदगी में मुझे भुला न देना," उसने कहा।

कप्तान लूइस ने चलने का हुक्म दिया। डोंगी में बैठे सैनिकों ने पानी में चप्पू उतारे और डोंगी बढ़ चली।

"मैं पुरजोश हूँ," चलते पत्थर ने कहा। वह साकागावेआ के पास बैठा नदी के बहाव को देख रहा था। "जब यह पता न हो कि आगे क्या होगा, तो यह ख़याल डरावना भी लग सकता है। पर ज़रा सोचो तो, अगले बसन्त तक तुम शायद दूर तक पसरे प्रशान्त महासागर को देख सको!"

''हो सकता है मैं अपने कबीले के लोगों को फिर से देखूँ,'' साकागावेआ ने हुलस कर कहा।

जब वे जंगलों के बीच से पश्चिम की ओर बढ़ने लगे यह ख़याल हमेशा उसके दिमाग में रहता। दिन सप्ताहों में बदले और बसन्त गर्मियों में। कभी बरसात होती और साकागावेआ को अपने नन्हे को किसी तरह उससे बचाने की जुगत करनी पड़ती। कभी सूरज तपता और उसे पॉम्प को चादर से ढ़कना पड़ता।

''तुम कितने अच्छे बच्चे हो,'' वह शोशोन ज़बान में फुसफुसा कर अपने बेटे से कहती। ''तुम कभी शिकायत नहीं करते।''

बेशक पॉम्प माँ को कोई जवाब नहीं देता था। साकागावेआ खुश होती कि उसका ख़याली दोस्त चलता पत्थर उसके साथ था, क्योंकि उस कछुए के सिवा बतियाने को उसके पास कोई और था ही नहीं।

एक दिन जब शाबोनो सफेद डोंगी का चप्पू चला रहा था, अचानक उत्तर से तेज़ हवा का झोंका आया। हवा पाल में भरी जिसे डोंगी एक ओर झुक गई। जिस ओर झुकी उस ओर का सामान फिसला और नदी में बह चला।

''बचाओ!'' शाबोनो चीखा। ''मैं तैर नहीं सकता!'' वह डर से कुछ ऐसे उछला मानो नदी में कूदने वाला हो।

''अरे संभाल के!'' कप्तान लूइस, जो तट पर चल रहा था, ज़ोर से बोला। ''डोंगी उलट जाएगी और हम अपनी सारी रसद खो देंगे!''

तब लूइस ने देखा कि साकागावेआ बह चले बक्सों, पोटलियों को झपट कर पानी से निकाल रही है।

कुछ ही पलों बाद शाबोनो ने खुद पर काबू पा लिया। उसने दूसरे लोगों की मदद से डोंगी को सीधा किया ताकि डोंगी में और पानी न भरे। उन्होंने डोंगी में भर चुका पानी उलीच कर निकाला और साामन को फिर से व्यवस्थित किया।

लूइस ने साकागावेआ से कहा, ''तुम अकेली थीं, जो डोंगी के एक ओर झुकने के बावजूद शान्त रहीं। तुममें इन पुरुषों से ज़्यादा साहस है। तुम न होतीं तो हम सारी रसद और सामान खो बैठते।''

साकागावेआ यह सुन खुश हुई। ''कप्तान ने मुझसे ऐसे बात की मानो मैं कोई अहम् इन्सान हूँ,'' उसने फुसफुसा कर चलते पत्थर से कहा। ''आख़िरकार मैं एक रोमांचक तजुर्बे का सचमें एक हिस्सा हूँ।''

''तुम हमेशा से ही उसका हिस्सा रही हो,'' चलते पत्थर ने कहा। ''बस कप्तान को आज के पहले इसका अहसास नहीं हुआ था।''

खोजी तब तक आगे बढ़ते गए, जब तक वे एक बड़े भारी झरने तक नहीं पहुँच गए। वे वहाँ ठहरे। कप्तान लूइस ने झरने को धड़धड़ाते हुए नीचे के पत्थरों पर गिरते देखा।

''हम अपनी नाव को तो पीछे छोड़ चुके हैं,'' कप्तान ने कहा। ''मुझे लगता है कि अब हमें डोंगियों को भी छोड़ना होगा। जहाँ तक एकदम छोटी नावों का सवाल है, हमें उन्हें इस झरने के पार उठा कर ही ले जाना होगा।''

कुछ पुरुष डोंगियों को पानी से निकालने और उन्हें झाड़-झंकाड़ से ढ़कने में जुट गए। दूसरे कुछ कप्तान क्लार्क के साथ आगे बढ़े ताकि उसके आगे के इलाके की खोजबीन कर सकें।

जब पुरुष इस सबमें व्यस्त थे साकागावेआ भला क्या कर रही थी?

वह चुपचाप बैठी थी, नन्हे पॉम्प और एक कम्बल को लिपटाए।

''माजरा क्या है?'' चलते पत्थर ने पूछा। ''तुमने मुझे शोशोन लोगों की बसावट के पास एक बड़े-भारी झरने की बात सैकड़ों बार सुनाई है। तुम अब अपने घर के पास हो साकागावेआ। क्या तुम उत्साहित नहीं हो?''

''बेशक हूँ,'' साकागावेआ ने कहा। ''पर मेरा पेट इस वजह से नहीं दुख रहा। मुझे लगता है कि मैं बीमार हूँ। ओह, चलते पत्थर अगर मैं यहाँ मर गई तो मेरे इस नन्हे का क्या होगा?''

चलता पत्थर कोई जवाब न दे सका। वह साकागावेगा को और-और बीमार होते देखता रहा। जल्द ही उसका बुखार बेहद तेज़ हो गया। डोंगियों में रख साथ लाई गई दवाओं का कोई असर न हुआ। दस दिनों तक साकागावेआ तेज़ दर्द से छटपटाती रही। वह न सो पाई, ना ही कुछ खा पाई।

आख़िरकार कप्तान क्लार्क अपनी खोजबीन से लौटा। ''मानदान फोर्ट के इण्डियन गंधक के एक सोते की बात बता रहे थे, जो विशाल झरने के पास है। हो सकता है कि उसका पानी साकागावेआ की मदद कर सके। कम से कम उससे कोई नुकसान तो नहीं होगा।''

क्लार्क ने वह सोता तलाशा और उसका पानी साकागावेआ के लिए लाया। उसे वह पानी पिलाया गया। उससे फायदा हुआ। जल्द ही वह फिर से उठ कर बैठने लायक हो गई।

कुछ दिनों में वह शिविर में अपने नन्हे के साथ चलने-फिरने लगी। उसने खोजी दल के लोगों को छोटी नावों और रसद को झरने के अठारह मील पार, ऊपर नदी तक ले जाने की तैयारी करते देखा।

दल के पुरुषों ने पहले कई बड़े पेड़ काटे। तब उन्होंने तनों को गोल टुकड़ों में काटा। डोंगियों की मस्तूलों के टुकड़ों से धुर बनाए। डोंगियों को इन जुगाड़ू छकड़ों पर लादा और झरने के बाद आने वाली चढ़ाई पर धकेलते हुए ऊपरी नदी तक पहुँचाया।

सारा साजो-सामान ऊपर तक पहुँचाने में खोजियों को कई सप्ताह लगे। जब तक यह सब पूरा हुआ साकागावेआ पहले जैसी ताकतवर हो चुकी थी। जब वह पॉम्प के साथ ऊपर पहुँची वह उत्तेजना से थर्रा रही थी।

"वह जगह देख रहे हो?" उसने चलते पत्थर से कहा। "वहाँ से मिनातारी लोग शोशोन शिविर पर हमला करने उतरे थे। और देखो, वहाँ से मुझे अगुआ किया गया था। और उधर जो पहाड़ियाँ हैं, वहाँ मेरे कबीले के लोग गर्मियों में रहते थे। मैं वहाँ बेरियाँ खोजती थी और कन्द खोदा करती थी, और . . . और . . . ।" सकागावेआ अचानक रुक गई, आगे कुछ कह न सकी।

"कोई नहीं," चलते पत्थर ने कहा। "शायद जल्द ही तुम शोशोन कबीले के लोगों से मिलो। हो सकता है तुम्हारे परिवार में कोई ज़िन्दा भी हो।"

लूइस और क्लार्क भी यह सोच रहे थे कि उन्हें शोशोन कब दिखेंगे। "तुम्हारे लोग घोड़ों का व्यापार करते हैं ना," लूइस ने साकागावेआ से कहा। "हमें जल्द ही घोड़ों की ज़रूरत होगी। मैं देख रहा हूँ कि हम नावों-डोंगियों की मदद से आगे जा ही नहीं सकते। अगर हमें इन पहाड़ों को पार करना है तो हमें या तो घोड़ों की सवारी करनी होगी या पैदल जाना पड़ेगा।"

सकागावेआ ने आगे की ओर इशारा किया। "उन पहाड़ियों के पीछे एक और नदी है," उसने कहा। "गर्मियों में मेरे लोग उस नदी के पास रहते हैं।"

"मैं तीन साथियों को साथ ले पैदल आगे बढ़ता हूँ," लूइस ने क्लार्क से कहा। "तुम डोंगियों और सामान के साथ आ जाना।"

लूइस खोजियों की छोटी टुकड़ी के साथ जंगली इलाके में बढ़ा। तीन दिन बाद उन्हें कुछ इण्डियन दिखे। उन्होंने इशारों से कहा कि वे लड़ने नहीं शान्ति में आए हैं। उन्होंने यह समझाने की कोशिश भी की कि उन्हें घोड़े चाहिए और यह कि उनकी डोंगियाँ जल्द ही मनकों, कम्बलों के साथ आ जाएंगी। उनसे वे घोड़ों की कीमत चुका देंगे।

शोशोन मुखिया का नाम कामेहवेट था। लगा यह कि वह गोरों की बात समझ रहा है। "कम से कम वह उग्र तो नही लगता," लूइस ने अपने साथियों से कहा। "पर हमें साकागावेआ की ज़रूरत होगी। वह हमारी बात शोशोन ज़बान में समझा सकेगी।"

कई दिन गुज़रे, लूइस साकागावेआ का इन्तज़ार करता रहा। इण्डियन कभी दोस्ताना लगते, तो कभी शंकालु। अंततः क्लार्क और दल के बचे साथी उस नदी के पास पहुँचे जहाँ इण्डियनों का शिविर था। बेशक साकागावेआ भी साथ थी।

लूइस शोशोन लोगों से घिरा खड़ा था। उसने साकागावेआ को तेज़ कदमों से आते देखा। उसका चेहरा खुशी से दमक रहा था। उसकी चाल में ऐसा हल्कापन था जो पहले कभी दिखा ही नहीं था।

"लीपिंग-फिश वुमन!" वह चीखी। "तुम ही तो हो! तुम महफ़ूज़ हो!"

"ग्रास वुमन!" वह साकागावेआ की ओर दौड़ती बोली। "मैं बेहद खुश हूँ। जब मुझे तुम्हें मिनातारी लोगों के पास छोड़ कर आना पड़ा था, मुझे लगा था कि मेरा दिल टूट ही जाएगा।"

यह सब देख इण्डियनों के सारे शक मिट गए। उन्हें समझ आ गया कि ग्रास वुमन को साथ लाने वाले लूइस और क्लार्क दुश्मन नहीं हो सकते। जब लीपिंग फिश वुमन और ग्रास वुमन गले मिल रहे थे, गोरे कप्तानों को शोशोन मुखिया कामेहवेट के तम्बू में ले जाया गया।

"पर हमारे साथ साकागावेआ का होना ज़रूरी है, लूइस ने कहा। "उसके बिना हम बात ही नहीं कर सकते।"

इस पर किसीको साकागावेआ को लाने भेजा गया। वह मुखिया के तम्बू में चुपचाप, आँखें नीचे झुकाए घुसी, जैसे शालीन इण्डियन औरतों को शोभा देता है।

तब उसने धीरे से आँखें ऊपर उठाईं और कामेहवेट को देखा। क्या तुम सोच सकते हो कि तब उसने क्या किया होगा?

"मेरे भाई!" साकागावेआ चीख पड़ी। "कामेहावेट, मेरे भाई!" खुशी के आँसू बहाते वह मुखिया की ओर दौड़ी। "मैं लौट आई हूँ, मेरे भाई!" उसने कहा।

"आश्चर्य है!" लूइस बोल पड़ा। हमारी दुभाषिया तो मुखिया की बहन है!"

इस मुलाकात के बाद सवाल नहीं उठे। तय हुआ कि गोरों को उनकी ज़रूरत के घोड़े मिल जाएंगे। कामेहवेट ने यह वादा भी किया कि वह लूइस, क्लार्क और खोजी दल के लोगों को पहाड़ों के पार पहुँचाने में मदद भी करेगा।

पर तब साकागावेआ को पता चला कि उसका भाई और उसके लोग लूइस और क्लार्क को छोड़ भैंसों के शिकार के लिए मैदानों में नीचे उतरने वाले हैं।

"उन्हें शिकार करना है क्योंकि उनके पास खाना नहीं है," साकागावेआ ने चलते पत्थर से कहा। "पर अगर शोशोन कप्तानों को छोड़ जाते हैं, तो वे गोरे इस ऊँचाई पर ठंड से मर जाएंगे। मैं क्या करूं? क्या मैं अपने लोगों के साथ दगा किए बिना कप्तानों की मदद कर सकती हूँ?"

"शायद नहीं," चलते पत्थर ने सोच कर कहा। "शायद तुम्हें दोनों में से एक को चुनना पड़ेगा।"

सो साकागावेआ ने अपना पक्ष चुना। उसने लूइस और क्लार्क को चेता दिया कि हो सकता है कि शोशोन उन्हें छोड़ जाएं।

''आप हमारे साथ ऐसा कैसे कर सकते हैं?'' लूइस ने कामेहावेट से कहा। ''आपने वादा किया था कि आप पहाड़ों के पार हमारा सामन पहुँचाने और रास्ता दिखाने में हमारी मदद करेंगे। और अब आप वादे से मुकर हमें छोड़ जाने वाले हैं?''

''मेरे लोग भूखे हैं,'' कामेहवेट ने कहा। ''अगर हम भैंसों का शिकार नहीं करते हैं तो हम भूखों मरेंगे। फिर भी तुम जो कह रहे हो वह सच है। और मैं ईमानदार इन्सान हूँ। मैं अपना वादा पूरा करूंगा। हम शोशोन तुम्हें पहाड़ों के पार पहुँचाने के पहले नहीं जाएंगे।''

कामेहवेट अपने योद्धाओं से बात करने गया। पर जाते वक़्त उसने अपना मुँह साकागावेआ की ओर से फेर लिया।

''वह समझ गया है कि मैंने उसके साथ दगा किया है,'' साकागावेआ ने दुखी मन से कहा। ''अब वह कभी मेरी ओर ताकेगा तक नहीं। मुझे मेरे ही लोगों ने त्याग दिया है। पर मैंने वही किया जो मुझे करना चाहिए था।''

"उदास मत हो,'' चलते पत्थर ने दिलासा देते कहा। उसने साकागावेआ को ढ़ाढ़स बंधाया। ''जब लूइस और क्लार्क रास्ता तलाश लेंगे, गोरे फिर से शोशोन लोगों के साथ व्यापार करने लौटेंगे। हो सकता है तब शोशोन भी मानदान लोगों की तरह खुशहाल बन सकें।''

साकागावेआ जानती थी कि यह सच है। खोजियों के साथ पश्चिम दिशा में बढ़ते समय उसका दिल कुछ हल्का था।

खोजियों का सफ़र पूरा होता उसके पहले साकागावेआ प्रशान्त महासागर के तट पर खड़ी हुई। उसने समुद्र के विस्तार को देखा। उसे अहसास था कि गोरे कप्तान उसके दोस्त बन चुके थे, और अपने अभियान में कामयाबी हासिल कर चुके थे। उन्होंने अमरीकी महाद्वीप का पूरब से पश्चिम का रास्ता तलाश लिया था। और क्योंकि उसे रोमांचक तजुर्बों से प्यार था और जोखिम उठाने व कठिनाइयों को झेलने की हिम्मत थी, उसने कामयाब होने में उनकी मदद की थी।

जब तुम साकागावेआ के बारे में सोचो तो तुम अपने और अपनी ज़िन्दगी के बारे में भी सोच सकते हो। क्या तुम तब भी नई चीज़ें करते हो जब तुम्हें उनके नतीजों का पता नहीं होता? क्या रोमांच महत्वपूर्ण होते हैं? यह सच है कि हमें लापरवाह नहीं होना चाहिए, न ही बेवकूफी भरे जोखिम उठाने चाहिए। पर क्या रोमांच का भाव कुछ सार्थक करने में तुम्हारी मदद कर सकता है? क्या यह ज़िन्दगी को ज़्यादा दिलचस्प और मज़ेदार बना सकता है?

ऐतिहासिक तथ्य

सकागावेआ
(1786 -   )

सकागावेआ शोशोन कबीले की थी। उसका जन्म तक़रीबन 1786 में उस इलाके में हुआ था, जो आज आइडाहो राज्य का हिस्सा है। जब वह लगभग ग्यारह साल की थी, उसे एक दुश्मन कबीले ने अगुआ कर लिया था। कुछ लोगों का कहना है कि उसे अगुआ करने के बाद मानदान कबीले को बेच दिया गया, जिन्होंने बाद में उसे तुसां शाबोनो को बेचा। कुछ अन्य वर्णन कहते हैं कि साकागावेआ को अगुआ करने वाला उसे जुए में हार गया था। सूचना बहुत स्पष्ट नहीं है, पर माना जाता है कि उठा लिए जाने के बाद साकागावेआ को भाग निकलने का मौका मिला पर उसने अपनी सहेली ऑटर वुमन के साथ रहना चुना।

शाबोनो ने, जो मानदान इण्डियनों के गाँव में रहता था, बाद में साकागावेआ और ऑटर वुमन को अपनी पत्नियाँ बनाया। जब कप्तान मैरीवैदर लूइस ओर विलियम क्लार्क 1804 में मिसूरी नदी के पास पहुँचे, ये दोनों ही स्त्रियाँ वहीं थीं। ये गोरे एक खोजी दल का नेतृत्व कर रहे थे, जो अमरीका के पूर्वी सिरे से पश्चिम में प्रशान्त महासागर तक पहुँचने का रास्ता तलाश रहा था।

पैसे कमाने के लालच में शाबोनो ने अभियान के लिए दुभाषिए की तरह काम करने की पेशकश की। उसे चुन लिया गया और सहमति इस बात पर हुई कि सफ़र में साकागावेआ भी उसके साथ चलेगी।

अप्रेल 1805 में खोजी दल मानदान गाँवों के इलाके से निकला। साकागावेआ का नन्हा बेटा पॉम्प उसकी पीठ पर लदा था। बच्चे का जन्म फरवरी में हुआ था, और उसकी पैदाइश की सूचना कप्तान लूइस ने बाकायदा अपनी डायरी में दर्ज की थी।

फोर्ट मानदान छोड़ने के चार महीनों बाद दल मिसूरी के ग्रेट फ़ॉल्स के पहाड़ी इलाके में पहुँचा। कप्तान लूइस ने दल के बाकी लोगों से पहले इलाके की खोजबीन की। उस दौरान कप्तान की मुलाकात शोशोन लोगों से हुई जो साकागावेआ के कबीले के थे। शोशोन लोगों को गोरों पर तब तक संदेह था, जब तक क्लार्क आ न पहुँचा। साकागावेआ बाकी खोजियों की अगुवाई कर रही थी। क्लार्क ने अपनी डायरी में दर्ज किया कि ''लूइस को घेरे शोशोन लोगों को देख उसके चेहरे पर बेपनाह ख़ुशी झलकने लगी।''

''लोगों की भीड़ के बीच से एक स्त्री साकागावेआ के पास बढ़ आई,'' क्लार्क ने लिखा। ''एक-दूसरे को पहचानने के बाद वे बेहद प्यार से गले मिलीं।''

यह स्त्री उसकी बचपन की सहेली थी। उसे भी साकागावेआ के साथ अगुआ कर लिया गया था। पर वह बाद में बच निकली थी।

शोशोन शिविर में साकागावेआ को न केवल अपनी पुरानी सखी मिली, बल्की अपना भाई भी मिला। वह कामेहावेट था जो शोशोन कबीले का मुखिया बन चुका था। साकागावेआ को गोरे कप्तानों के साथ देख उसने वादा किया कि वह खोजियों को घोड़े और पहाड़ों को पार करवाने के लिए रास्ता दिखाने वाले भी देगा। ताकि वे समुद्र तक का सफ़र पूरा कर सकें।

लूइस और क्लार्क इस वादे का फ़ायदा उठाते उसके पहले ही कामेहवेट ने अपना इरादा बदल लिया। उसने तय किया कि वह अपने जाँबज़ों को लेकर पहले शिकार पर निकलेगा। इससे गोरे फंस जाते।

सकागावेआ ने लूइस और क्लार्क को आगाह कर दिया कि हो सकता है कि कामेहावेट उन्हें छोड़ जाए। इसके साथ ही साकागावेआ के अपने लोगों के साथ सारे रिश्ते टूट गए। वह गोरों के पक्ष में जो हो गई थी। ज़ाहिर है वह अभियान को कामयाब होते देखना चाहती थी।

कामेहावेट को शिकार मुल्तवी करने पर मना लिया गया ताकि गोरे रॉकीस् पार कर कोलम्बिया नदी की उप-शाख क्लीयरवॉटर तक पहुँचा दिया जाए। इसके दो महीने बाद लूइस और क्लार्क अपने दल के साथ प्रशान्त के तट पर पहुँच गए।

अभियान पूरा होने के बाद साकागावेआ की ज़िन्दगी के बारे में लगभग कोई जानकारी नहीं है। 1912 में शाबोनो की एक पत्नी की मौत डाकोटा इलाके में फोर्ट मैन्युएल में हुई। पर संभव है कि यह ऑटर वुमन रही हो। क्योंकि किंवदन्ति के अनुसार जब साकागावेआ की मौत हुई वह काफ़ी वृद्ध हो चुकी थी, और उसने पश्चिम में ख़ूब सफ़र किया था। पर यह हम यह पक्की तौर पर नहीं जानते। पर इतना बेशक जानते हैं कि इस अद्भुत इण्डियन बालिका और रोमांचक तजुर्बों के प्रति उसके उत्साह के बिना लूइस और क्लार्क अपना महान सफ़र कभी पूरा नहीं कर पाते।